सिंहस्थ कुंभ महापर्व 2016 के अवसर पर आयोजित अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के दौरान कंट्रीब्यूशन ऑफ इंडियन कल्चर टू द वर्ल्ड के विशेष प्लेनरी में माननीय अध्यक्ष महोदया का भाषण

- It gives me great pleasure to be amongst you all on this International Conference Vichar Kumbh on Fundamentals thoughts of Development, Simhasth 2016.

- **कुम्भ की बात करते ही पहला विचार वहां आने वाले साधु–संतों के बारे में आता है। सन्त शब्द अत्यन्त श्रद्धा से युक्त शब्द है। मैं कहना चाहूंगी कि सन्त यानि 'स' का अन्त, यानि स्व–अहंकार से मुक्त व्यक्ति ही सन्त है, जिसका जीवन जनकल्याण व उत्थान के लिए समर्पित हो।**

- **सन्त जन अपने ज्ञान से देश, काल और परिस्थिति का सटीक आकलन कर पाते हैं। वे निराकार भाव से समाज को भविष्य के लिए मार्गदर्शन देते हैं एवं अपनी संस्कृति को सहेजकर रखने की प्रेरणा देते हैं ताकि बदलते वक्त में जीवन जीने की कला इनके सान्निध्य में मिलती रहे।**

- वे केवल स्व–मोक्ष तक ही सीमित नहीं हैं बल्कि वे सब इस जीवन की सत्यता को समझते हुए एक आदर्श जीवन जीने की कला को जन–जन तक पहुंचाने का पुण्य कार्य कर रहे हैं। तभी तो हम सब उन्हें श्रद्धा से सन्त कहते हैं।

- **वैसे तो वे चारो स्थान, जहां कुम्भ का आयोजन होता है, वे अपने–आप में विशेष हैं, परंतु मैं यहां यह भी कहना चाहूंगी कि किसी भी स्थान पर आध्यात्मिक समागम हो और चारों दिशाओं से एकत्रित होकर साधु–संत आपस में विचार–विमर्श करें तो निश्चय ही वहां के वातावरण में सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। इस सकारात्मक ऊर्जा**

एवं जीवन्त माहौल से प्रेरित होकर ही श्रद्धालुजन ऐसे समागमों में स्वतः ही खिंचे चले आते हैं तो कुछ भक्तियोगी पुण्य प्राप्ति एवं ज्ञान प्राप्ति की लालसा में आते हैं।

सहस्त्रं कार्तिके स्नानं, माघे स्नानं शतानि च।

वैशाखे नर्मदा कोटिः, कुम्भस्नानेन तत्फलम् ॥

अर्थात् सैकड़ों स्नान कार्तिक मास में किए हों, हज़ारों स्नान माघ मास में तथा करोड़ों बार वैशाख में नर्मदा स्नान करने से जो पुण्य अथवा फल प्राप्त होता है, वही पुण्य एक बार कुम्भ स्नान पर्व में स्नान करने से प्राप्त हो जाता है। यह है इस कुम्भ का विशेष महत्व। कुम्भ आस्था, धर्म एवं अध्यात्म का अद्भुत संगम है। **Religion means following the messenger whereas spirituality means following the message.**

- भारतीय संस्कृति ने हमेशा पंचभूत पर विश्वास किया है यानी पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश। शास्त्र में वर्णित है:—**''क्षिति जल पावक गगन समीरा, पंचतत्व मिल बना शरीरा।''** हम अपने कर्म और ज्ञान, दोनों से इन पंचमहाभूतों के मर्म को समझते हुए भारतीय पद्धति से जीवन जीते हैं और यही हमारी विशेषता है।

- We have always nurtured the nature and taught the world how to protect it. We have always protected the environment in various ways.

- **हमारे धर्मग्रन्थ, हमारी जीवन पद्धति, हमारा सब कुछ पर्यावरण व सृष्टि को सहेजने के लिए है। इसीलिए तुलसी, नीम, वटवृक्ष, पीपल की हर घर में पूजा होती है।**

- **Rivers are lifelines of any civilization.** **नदी जीवनदायिनी है। नदी है, तो जल है और जल है तो जीवन है।**

- **कृषि प्रधान देश होने के नाते हम धरती के महत्व को भी खूब समझते है। हम जानते हैं कि धरती माता हमारा भरण–पोषण करती है और अन्ततः जिसमें हम समा जाते हैं। हम धरती से बहुत–कुछ लेते हैं, पर धरती से उसका सब–कुछ ना ले लें, इसके प्रति भी सचेत हैं।**

- सभी मन में एक ही भाव लेकर कुम्भ स्नान के लिए आते हैं। **नदी सबको एक–सी शीतलता एवं सन्त सबको एक–सा ज्ञान देते हैं। यह समता का पर्व है।**

- मेरे मन में एक प्रश्न उठता है कि आखिर राजा या शासक या सत्तासीन व्यक्ति की क्या परिभाषा है? इसका उत्तर ढूंढती हूं तो मुझे स्वामी समर्थ रामदास का कथन याद आता है। **''राजा एक उपभोग शून्य स्वामी होता है।''** सत्ताधारी अथवा राजा का धर्म सत्ता अथवा शक्ति का उपयोग दूसरों के भले के लिए करना है।

- **अनेकता में एकता की अमृत भावना के कारण हमारी संस्कृति निरंतर मानव जाति के कल्याण और विकास की दिशा में प्रयास करती रही है। भारतीय संस्कृति से ओत–प्रोत यह संदेश इस मंच के माध्यम से पुनः विश्व में गुंजायमान हो रहा है।**

- **आज हमारे युवा आज विश्व के हरेक कोने में लगभग हर क्षेत्र में अपनी प्रतिभा का सिक्का जमा रहे हैं। अमेरिका में सिलिकॉन वैली की अर्थव्यवस्था को शिखर पर पहुंचाने में उनका विशेष योगदान रहा है। आज वे समर्थ शिक्षक, व्यापारी, राजदूत एवं आध्यात्मिक गुरू हैं एवं सम्पूर्ण जगत का नेतृत्व कर रहे हैं और वे अपने भारतीय**

संस्कारों के कारण पूर्ण निष्ठा, ईमानदारी, व मेहनत से काम कर वहां की अर्थव्यवस्था में अपना महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

- Human excellence depends on development of culture. Only India culture can be called as first world culture.

- Indian Culture is equal to Human Culture because our culture focuses on inculcating human values in every person. In Indian Culture, there is absolute freedom of speech and every thought is allowed to develop freely whether it is a theist or atheist. Everyone is free to imagine or accept the God's form according to one's own belief.

- **The Indian Cultural expansion was not oppressive in character; rather it was educative and elevating. The expansion and development of Indian culture in other parts of world has proved to other civilizations of the world that such a cultural synthesis is a healthier one as it has no use of force or enducement or hegemonistic aspirations. In fact, wherever Indians have gone, they have left behind not only their footprints but also spiritual and heart prints.**

- **A Greek traveler in 1st Century AD Said about India and I quote, " In India, I found a race of mortals living upon the**

Earth, but not adhering to it, inhabiting cities, but not being fixed to them, possessing everything, but possessed by nothing".

- We have shown to the world that different religions, languages, practices and beliefs can co-exist and prosper simultaneously. This is the most amazing aspect of our culture.

- **Indian contribution to the world has been manifold. From Indigo to Pepper, from Chess to Pachisi, from Moral Fables to Asceticism, from Indology to Philosophy and so on, *but Monism, Arithmatics, Democracy are undoubtedly the greatest as the first has overwhelmed the philosphy, the second has advanced science and the third has elevated human society.***

- So far as medicine is concerned, Ayurveda is regarded as the origin of all medicine. Surgery was known to ancient India thousands of years back.

- India has contributed tremendously to the world and even today, we give something new to the world to think, ponder and follow sooner or later. हमारा देश अद्भुत इसलिए भी है कि हमने अपनी पिछली अच्छी परंपराओं को भविष्य के लिए सहेजकर रखा है।

- **Yoga has its roots in India. Yoga is somewhat great boon to humankind and the way to feel and amalgamate with the ultimate source of power i.e. God. It has the power to heal body, mind and soul.**

- मार्क ट्वैन के शब्दों में भारत की व्याख्या कुछ इस प्रकार है–**"India is the cradle of the human race, the birthplace of human speech, the mother of history, the grandmother of legend, and the great grandmother of tradition. Our most valuable and most constructive material in the history of man are treasured up in India only".**

- **हमारे ऋषियों ने मानव एकता और मानव कल्याण का भाव 'वसुधैव कुटुम्बकम्' में प्राचीन काल में ही मुखरित किया है। हमारे दर्शन का प्रमुख सूत्र है 'एकोज्हं बहुस्याम्' यह सारा चराचर जगत् परब्रह्म का ही अंश है। अतः मानव अपने मूल उद्भव से भी जुड़ा है और ब्रह्माण्ड से भी।**

- आज इस मंच से मैं पुनः सम्पूर्ण विश्व का आह्वान करती हूं कि आएं और शिप्रा की पुण्यसलिला नदी में डुबकी लगाएं एवं सम्पूर्ण विश्व एक हो जाए।

- मन, वचन, कर्म से हम सभी सत्य का साथ दे, असत्य का बहिष्कार करें, धर्म की जय हो और अधर्म का नाश हो। परमात्मा हमें सद्बुद्धि दें एवं हमारे हृदय में सबके लिए कल्याण, करूणा एवं प्रेम की भावना अंतरतल से उपजे। इन्हीं शब्दों के साथ मैं उज्जैन

की मिट्टी को प्रणाम करती हूं। आप सभी यहां पधारे, इसके लिए आप सभी का धन्यवाद।

जय हिन्द।

———————